

अंतरजातीय संस्कृति को व्यक्त करने की विशेषताएँ
(डॉ. सच्चिदानंद जोशी की 'दक्षिणा' कहानी के आधार पर)

रखमतजोनोवा कामोला अब्दुमुताल किज़ी
पीएचडी, प्राध्यापिका ताशकंद राज्यीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय
ताशकंद, उज्बेकिस्तान
फ़ोन: +998909474123
kamolarahmatjonova@gmail.com

Annotatsiya. Maqolada hind yozuvchisi Dr. Sachchidanand Jo'shi¹²ning "Dakshina" hikoyasi misolida tarjima jarayonida milliy realiyalar va madaniy o'ziga xosliklarni o'zbek tilida ifodalash muammolari tahlil qilinadi. Unda hind jamiyatiga xos diniy tushunchalar, oilaviy muloqot, 'mithai' (shirinlik) va 'dakshina' (in'om) kabi realiyalarning tarjimada qayta yaratishdagi murakkabliklar ko'rsatib berilgan. Shuningdek, hindiy va o'zbek tillarining til xususiyatlaridagi farqlar tarjima jarayoniga ta'siri o'rganiladi. Tarjimonning vazifasi faqat so'zlarni ko'chirish emas, balki ikki xalq madaniyatini bog'lovchi vositachi sifatida realiyalarning izohli talqinini berish ekanligi ta'kidlanadi. Tarjimon nafaqat matnni boshqa tilga o'tkazadi, balki matnda ifodalangan urf-odat va madaniy jihatlarni ham hisobga oladi. U realiyalarning izohli talqinini berib, o'quvchiga chet tilidagi madaniyatni tushunarli qilishi kerak. Shu orqali tarjimon ikki xalq o'rtasida madaniy ko'priklar vazifasini bajaradi. Natijada, tarjima nafaqat so'zlarni o'zgartirish, balki muloqot vositasi sifatida samara beradi.

Kalit so'z va iboralar: milliy va madaniy identifikatsiya, qadriyatlar translyasiyasi, ustozshogird paradigmasi, dakshina, realiya, hind jamiyati.

Аннотация. В статье анализируются проблемы передачи национальных реалий и культурной специфики в узбекском переводе на примере рассказа индийского писателя д-ра Саччидананда Джоши «Дакшина». Подчеркиваются трудности воссоздания культурно обусловленных понятий, таких как религиозные представления, характерные для индийского общества, модели семейного общения, а также реалии типа 'mithai' (сладости) и 'dakshina' (дар, приношение). Кроме того, рассматривается влияние различий между хинди и узбекским языками на процесс перевода. В исследовании отмечается, что задача переводчика не ограничивается переносом слов: он выступает посредником, связывающим культуры двух народов, обеспечивая пояснительное толкование культурно-специфических элементов. Переводчик не

¹² Dr. Sachchidanand Joshi — hindistonlik taniqli yozuvchi, teatr san'ati vakili va akademik, hozirda Indira Gandhi Milliy San'at Markazi (IGNCA)ning bosh kotibi lavozimida faoliyat yuritmoqda. U 1963-yil 9-noyabrda tug'ilgan va tarixshunoslik hamda ommaviy kommunikatsiya sohalarida ilmiy faoliyat yuritgan. Makhanlal Chaturvedi Milliy Ommaviy Axborot va Kommunikatsiya Universitetida dekan va ro'yxatga olish bo'yicha dekan sifatida ishlagan. Shuningdek, u Kushabhau Thakre Jurnalistika Universitetining birinchi vitse-chansleri bo'lgan va 10 yil davomida bu lavozimni egallagan. Uning asarlari orasida "Sachchidanand Joshi ki Lokpriya Kahaniyan" (2017), "Kuchh Alpa Viraam" (2018), "Pal Bhar ki Pahchan" (2019) kabi she'riy to'plamlar mavjud. Shuningdek, u "Mera Desh Mera Dharm" nomli ikki jildan iborat nutqlar to'plamini tahrir qilgan. <https://www.telegraphindia.com/my-kolkata/people/all-of-us-are-acting-in-life-sachchidanand-joshi>

только передаёт текст на другой язык, но и учитывает обычаи и культурные аспекты, заключённые в нём. Давая интерпретационные комментарии к реалиям, переводчик делает иностранную культуру понятной читателю. Таким образом, перевод выступает не просто как преобразование слов, а как действенное средство межкультурной коммуникации.

Ключевые слова: национальная и культурная идентификация, трансляция ценностей, парадигма учитель–ученик, дакшина, реалия, индийское общество.

Annotation. This article examines the challenges of conveying national realities and cultural specificities in Uzbek translation, with particular reference to the short story “Dakshina” by Indian writer Dr. Sachchidanand Joshi. The study highlights the complexities of rendering culturally embedded concepts such as religious notions inherent in Indian society, traditional patterns of family communication, and culture-specific items like ‘mithai’ (sweets) and ‘dakshina’ (offering). It further explores the influence of linguistic differences between Hindi and Uzbek in the translation process.

The analysis underscores that the role of the translator extends beyond the mere transfer of words; it involves functioning as a cultural mediator who bridges the traditions and values of two nations. By providing explanatory interpretations of culture-specific elements, the translator ensures the accessibility of the foreign culture to the target readership. Thus, translation emerges not only as a linguistic act but also as a significant medium of intercultural communication, facilitating the transmission of values, customs, and socio-cultural dimensions across linguistic boundaries.

Keywords: national and cultural identification, transmission of values, teacher–disciple paradigm, dakshina, realia, Indian society.

अनुसंधान पद्धति – इस शोध आलेख की पद्धति भारतीय लेखक डॉ. सच्चिदानंद जोशी की कहानी “दक्षिणा” के पाठ-विश्लेषण तथा अनुवाद अध्ययन (Translation Studies) की तुलनात्मक पद्धतियों पर आधारित है। अनुसंधान में निम्नलिखित वैज्ञानिक दृष्टिकोणों और तरीकों का प्रयोग किया गया है:

1. पाठ-विश्लेषण

कहानी “दक्षिणा” के मूल हिंदी पाठ का गहन अध्ययन किया गया। इसमें:

- कथानक की संरचना
- पात्रों के बीच संवाद
- सांस्कृतिक एवं धार्मिक वास्तविकताओं
- प्रतीकों और पारंपरिक मूल्यों का विश्लेषण करते हुए उन तत्वों की पहचान की गई जो उज़्बेक अनुवाद में सांस्कृतिक रूप से पुनः प्रस्तुत करने में जटिलता उत्पन्न करते हैं।

2. तुलनात्मक अनुवाद-अध्ययन

हिंदी और उज़्बेक भाषाओं की व्याकरणिक संरचना, शब्दावली और अभिव्यक्ति-शैली की तुलना की गई। इस चरण में:

- वास्तविकाओं (realia) के अनुवाद

- सांस्कृतिक रूप से निहित शब्दों
- धार्मिक-सामाजिक अवधारणाओं
- गुरु-शिष्य परंपरा, दक्षिणा, मिठाई जैसे प्रतीकों के उज़्बेक भाषा में संभावित अनुवाद-विकल्पों का अध्ययन किया गया।

3. सांस्कृतिक-भाषिक विश्लेषण

Vlahov and Florin की “अनुवाद में अनुवादित न होने वाला” तथा अन्य अंतरसांस्कृतिक अनुवाद सिद्धांतों के आधार पर यह निर्धारित किया गया कि कौन-से तत्व:

- प्रत्यक्ष अनुवाद से
- व्याख्यात्मक अनुवाद से
- टिप्पणी आधारित अनुवाद से बेहतर अभिव्यक्ति प्राप्त करते हैं।

4. वास्तविकाओं की वर्गीकरण पद्धति

कहानी में उपस्थित सभी सांस्कृतिक वास्तविकाओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया:

1. धार्मिक-प्रतीकात्मक वास्तविकताएँ – दक्षिणा, गुरु-पूजन, चरण-स्पर्श
 2. सामाजिक-पारिवारिक वास्तविकताएँ – पारिवारिक भूमिका, संवाद-शैली, सामाजिक संबंध
 3. भोजन एवं दैनिक जीवन से संबंधित वास्तविकताएँ – मिठाई, भोजन-व्यवस्था, मेहमाननवाज़ी
- प्रत्येक श्रेणी के लिए उज़्बेक भाषा में सबसे उपयुक्त अनुवाद-रणनीति निर्धारित की गई।

5. व्यावहारिक अनुवाद-रणनीतियाँ

अनुसंधान में निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई गईं:

- ट्रांसलिटरेशन
- व्याख्यात्मक अनुवाद (उदा: “धार्मिक कृतज्ञता-भेंट”)
- सांस्कृतिक टिप्पणी जोड़ना
- जटिल संयुक्त वाक्यों को उज़्बेक भाषा की स्वाभाविकता के अनुसार दो या अधिक वाक्यों में विभाजित करना

इस पद्धति से यह निर्धारित किया गया कि उज़्बेक पाठक के लिए कौन-सा अनुवाद सबसे प्राकृतिक और अर्थपूर्ण प्रतीत होता है।

6. भाषिक-संरचनात्मक विश्लेषण

हिंदी और उज़्बेक भाषा के:

- क्रिया-रूप
- वाक्य संरचना
- सम्मानसूचक अभिव्यक्तियाँ
- प्रसंगिक अर्थ परिवर्तन की तुलना कर यह विश्लेषण किया गया कि अनुवाद करते समय किन स्थानों पर भाषिक अनुकूलन आवश्यक है।

7. निष्कर्ष-आधारित पद्धति

कहानी में प्रयुक्त सांस्कृतिक तत्वों के अनुवाद से प्राप्त निष्कर्षों को व्याख्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया। इस चरण में यह विश्लेषण किया गया कि:

- कौन-से अनुवाद विकल्प मूल अर्थ को सुरक्षित रखते हैं
- किन विकल्पों से राष्ट्रीय रंग खो सकता है
- किन स्थानों पर टिप्पणी जोड़ना आवश्यक है

इस पद्धति का मूल लक्ष्य यह है कि:

- संस्कृति-विशिष्ट वास्तविकताओं को उज़्बेक भाषा में सही अर्थ, सही संदर्भ और सही भावनात्मक रंग के साथ प्रस्तुत किया जाए;
- और अनुवादक की भूमिका को सांस्कृतिक मध्यस्थ के रूप में वैज्ञानिक आधार पर स्पष्ट किया जाए।

सारांश। इस अलेख में भारतीय लेखक डॉ. सच्चिदानंद जोशी की कहानी “दक्षिणा” के उदाहरण के माध्यम से अनुवाद प्रक्रिया में राष्ट्रीय वास्तविकताओं और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को उज़्बेक भाषा में व्यक्त करने की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इसमें भारतीय समाज से संबंधित धार्मिक अवधारणाएँ, पारिवारिक संवाद, ‘मिठाई’ और ‘दक्षिणा’ (दान/उपहार) जैसी वास्तविकताओं को अनुवाद में पुनः सृजित करने की जटिलताएँ दर्शाई गई हैं।

इसके अलावा, हिंदी और उज़्बेक भाषाओं की भाषाई विशेषताओं में अंतर का अनुवाद प्रक्रिया पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अनुवादक का कार्य केवल शब्दों का अनुवाद करना नहीं, बल्कि दो संस्कृतियों को जोड़ने वाले मध्यस्थ के रूप में वास्तविकताओं की व्याख्या करना है। अनुवादक न केवल सामग्री को दूसरी भाषा में परिवर्तित करता है, बल्कि उसमें व्यक्त रीति-रिवाज और सांस्कृतिक पहलुओं को भी ध्यान में रखता है।

अनुवादक को वास्तविकताओं की व्याख्या देकर पाठक को विदेशी संस्कृति को समझने योग्य बनाना आवश्यक है। इस प्रकार अनुवाद न केवल शब्दों को बदलने का कार्य करता है, बल्कि संवाद का एक प्रभावी साधन बनकर सामने आता है।

मुख्य शब्द और वाक्यांश: राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान, मूल्य प्रसारण, गुरु-शिष्य प्रतिमान, दक्षिणा, वास्तविकता, भारतीय समाज

साहित्य मानवता की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने के सबसे प्रभावशाली साधनों में से एक है। विशेष रूप से, कहानी विधा विभिन्न समाजों के मूल्य, परंपरा और सामाजिक जीवन को उजागर करने में अनन्य भूमिका निभाती है। “कहानी — जीवन के एक अंश को प्रदर्शित करने और मानसिक अवस्था को व्यक्त करने के लिए सबसे उपयुक्त विधा है।” इस प्रकार, कहानियों के माध्यम से न केवल कलात्मक-सौंदर्यपूर्ण आनंद प्राप्त होता है, बल्कि राष्ट्रीय भावना, परंपरा और सांस्कृतिक मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित होते हैं।

कहानी एपिक शैली की छोटी मात्रा वाली विधा है; इस शैली में लिखी गई कृति कथानक और रचना की अपेक्षाकृत सरलता, और एक व्यक्ति द्वारा कथा प्रस्तुत करने के कारण उपन्यास और लंबी कहानी से भिन्न होती है। यह पूरे समाज के लिए समझने योग्य, सरल और पठनीय विधा है।

डॉ. सच्चिदानंद जोशी आधुनिक भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक जीवन में एक प्रतिष्ठित लेखक, नाटककार और वैज्ञानिक-रचनात्मक व्यक्तित्व हैं। वे भारत में सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और उसे युवा पीढ़ी तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनकी कहानी “दक्षिणा” समाज में

धार्मिक-सामाजिक मूल्यों, गुरु-शिष्य संबंधों, राष्ट्रीय परंपराओं और वास्तविकताओं को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने के लिए विशेष महत्व रखती है।

कहानी में भारतीय समाज की प्राचीन 'दक्षिणा' परंपरा, पारिवारिक संवाद, मेहमाननवाज़ी का प्रतीक मिठाई और सामाजिक एकता के मुद्दे, उभरकर सामने आते हैं। इस कृति में भारतीय समाज से संबंधित धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वास्तविकताएँ विस्तृत रूप में उपस्थित हैं। अनुवादक के लिए इन्हें उज़्बेक भाषा में स्थानांतरित करना जटिल है और इसके लिए विस्तृत टिप्पणी और स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए, कहानी के शीर्षक में ही वास्तविकता प्रकट होती है:

“दक्षिणा ही ब्राह्मण को दी जाने वाली कृतज्ञता की परंपरागत भेंट है।”

यहाँ 'दक्षिणा' केवल उपहार नहीं, बल्कि धार्मिक और प्रतीकात्मक आभार का संकेत है। उज़्बेक में इसका तैयार विकल्प नहीं है। इसलिए अनुवादक को शब्द को मूल रूप में रखना चाहिए और स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

कहानी में गुरु-शिष्य संबंध धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से व्यक्त होते हैं:

“उसने गुरु के चरणों में दक्षिणा रखी और बोली कि यह मेरी कृतज्ञता की निशानी है।”

यहाँ भारतीय समाज में गुरु के प्रति गहन सम्मान व्यक्त होता है। उज़्बेक संस्कृति में गुरु के प्रति सम्मान होता है, परंतु 'पैर के नीचे वस्तु रखना' प्रतीक नहीं है। इसलिए अनुवादक को इसे स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

कहानी सामान्य पारिवारिक जीवन को भी प्रस्तुत करती है। उदाहरण के लिए, एक दृश्य में माता अपने बच्चे को कहती हैं:

“...माँ तःर फर्ज़ निभाते हुए...”

यह भारतीय पारिवारिक मूल्य को दर्शाता है। उज़्बेक समाज में भी समान शब्द हैं, जैसे 'माँ का कर्तव्य', परन्तु मूल भाव में धार्मिक और सामाजिक अर्थ शामिल है।

इसके अलावा, कहानी में पड़ोसी और समाज के सदस्यों के बीच संवाद भी प्रकट होते हैं, जो भारतीय समाज की सामूहिक भावना और सामाजिक एकता को दर्शाते हैं।

कहानी में भारतीय मेहमाननवाज़ी परंपराएँ भोजन के माध्यम से व्यक्त होती हैं:

“डाइनिंग टेबल पर रखे मिठाई के पैकेट को देखकर बोली...”

यहाँ दो वास्तविकताएँ हैं: 'मिठाई' और 'डाइनिंग टेबल'।

मिठाई केवल मिष्ठान्न नहीं, बल्कि उत्सव, खुशी और स्नेह का प्रतीक है।

डाइनिंग टेबल केवल भोजन करने की मेज़ नहीं, बल्कि मेहमानों के स्वागत और संवाद का केंद्रीय स्थान है। इसलिए अनुवाद में इसे केवल 'मेज़' कहना पर्याप्त नहीं है; स्पष्टीकरण आवश्यक है।

अनुवाद प्रक्रिया में हिंदी और उज़्बेक भाषाओं की शब्दावली, रूप और वाक्य संरचना के अंतर स्पष्ट होते हैं।

हिंदी में क्रियाओं की अवधि क्रिया मिश्रण के माध्यम से व्यक्त की जाती है: “वह मंदिर **जा रहा है**” उज़्बेक में इसे केवल एक अतिरिक्त उपसर्ग के साथ व्यक्त किया जाता है: “U ibodatxonaga **ketmoqda**”.

वाक्य संरचना के दृष्टिकोण से भी कुछ अंतर देखे जा सकते हैं। हिंदी में संयुक्त वाक्यों का व्यापक प्रयोग होता है: “उसने गुरु के चरणों में दक्षिणा रखी और कहा कि यह मेरी कृतज्ञता की निशानी है।” उज़्बेक में इस प्रकार वाक्य को दो हिस्सों में विभाजित करके अनुवाद करना अधिक स्वाभाविक है: ‘U ustozning poyiga dakshina qo‘ydi.’ फिर: ‘Bu mening minnatdorchiligimning belgisi,’ dedi’. वाक्य संरचनात्मक अंतर अनुवाद में स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए वाक्य को हिस्सों में विभाजित करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, डॉ. सच्चिदानंद जोशी की कहानी “दक्षिणा” राष्ट्रीय और सांस्कृतिक वास्तविकताओं को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने और अनुवाद प्रक्रिया में इन्हें दूसरी भाषा में स्थानांतरित करने के महत्व को उजागर करने वाली एक महत्वपूर्ण कृति है। इस कहानी में ‘दक्षिणा’ के माध्यम से भारतीय समाज की प्राचीन धार्मिक-सामाजिक परंपराएँ, गुरु-शिष्य संबंध, पारिवारिक मूल्य और मेहमाननवाज़ी के प्रतीक प्रस्तुत होते हैं।

अनुवाद प्रक्रिया में मुख्य चुनौती यह है कि कहानी में उपस्थित वास्तविकताएँ – ‘दक्षिणा’, ‘मिठाई’, ‘डाइनिंग टेबल’ और गुरु-शिष्य अनुष्ठान – उज़्बेक संस्कृति में तैयार विकल्प नहीं रखते। यदि अनुवादक केवल शब्दशः अनुवाद करता है, तो मूल अर्थ, राष्ट्रीय रंग और प्रतीकात्मक अर्थ खो सकते हैं। इसलिए अनुवादक का मुख्य कार्य केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि उन्हें व्याख्यायित करना, पाठ के अनुसार स्पष्टीकरण देना और आवश्यकतानुसार अतिरिक्त टिप्पणी प्रदान करना है।

इस कहानी का उदाहरण यह दर्शाता है कि अनुवाद केवल भाषाई संचार नहीं, बल्कि दो संस्कृतियों के बीच एक पुल है। उज़्बेक में अनूदित पाठ में ‘दक्षिणा’ को केवल ‘उपहार’ कहना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह केवल भौतिक उपहार नहीं, बल्कि आभार का प्रतीक है। इसी तरह, ‘मिठाई’ को केवल ‘मिठाई’ कहना भी पर्याप्त नहीं, क्योंकि यह खुशी और स्नेह का प्रतीक भी है। इस प्रकार, अनुवाद में राष्ट्रीय वास्तविकताओं का स्पष्टीकरण करना कहानी की भावनात्मक और सांस्कृतिक विशिष्टता को पूरी तरह प्रकट करता है।

इस प्रकार, “दक्षिणा” की कहानी का अनुवाद राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने और उन्हें अन्य संस्कृतियों तक पहुंचाने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि अनुवादक केवल भाषा जानकार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मध्यस्थ और अंतर-सांस्कृतिक संवाद के रचनाकार हैं।

संदर्भ

1. Bo‘ronov J. Ingliz va o‘zbek tillarining qiyosiy grammatikasi. – T.: O‘qituvchi, 1973. (बोरोनोव, जे. इंग्लिश और उज़्बेक भाषाओं की तुलनात्मक व्याकरण। ताशकंद: ओकितुचि, 1973)
2. O‘zbekiston milliy ensiklopediyasi. 1 tom. – T.: 2000. (उज़्बेक राष्ट्रीय एन्साइक्लोपीडिया। खंड 1, ताशकंद: 2000।)
3. O‘zbek tilining izohli lug‘ati. – Toshkent: O‘zbekiston Milliy Ensiklopediyasi, 2006. – T. 1–4. (उज़्बेक भाषा की व्याख्यात्मक शब्दावली। ताशकंद: ओज़्बेक नेशनल एन्साइक्लोपीडिया, 2006। खंड 1–4)

4. Nick Palfreyman, Keiko Sagara, Ulrike Zeshan. *Methods in Carrying out Language*, 2014.
5. सचिनानंद जोशी. “दक्षिणा”
6. Vlahov S., Florin S. *Непереводимое в переводе.* – Moskva, 1980.